Journal of the Oriental Institute ISSN No. 0030-5324
M. S. University of Baroda Impact Factor 7.1 UGC Care Group I

राजन गवस एवं मिथिलेश्वर के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

वैशाली दगु दामले, शोध-छात्र, हिंदी अनुसंधान केंद्र, के. टी. एच. एम. महाविद्यालय, नाशिक
(सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे संलग्नित)
डॉ. जगदीश आर. परदेशी, शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, के. टी. एच. एम. महाविद्यालय, नशिक जि. नाशिक (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना

राजन गवस और मिथिलेश्वर दोनों ही समकालीन भारतीय साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक हैं, जिन्होंने ग्रामीण जीवन, सामाजिक विषमता और आमजन की पीड़ा को अपने साहित्य में प्रमुखता से स्थान दिया है। यद्यपि दोनों लेखकों का सांस्कृतिक और भाषाई परिवेश भिन्न है- राजन गवस मराठी साहित्य से जुड़े हैं जबकि मिथिलेश्वर हिंदी कथा साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं -फिर भी इनके लेखन में कई समानताएँ दिखाई देती हैं।

राजन गवस का लेखन मुख्यतः महाराष्ट्र के ग्रामीण समाज की जातिगत संरचना, दलित चेतना और सामाजिक असमानताओं को उजागर करता है। उनके पात्र जातिवादी व्यवस्था से संघर्ष करते हैं, आत्मसम्मान की खोज में जुटे रहते हैं और सामाजिक बदलाव की आकांक्षा रखते हैं। वहीं, मिथिलेश्वर का साहित्य हिंदी पट्टी के ग्रामीण परिवेश का जीवन्त चित्र प्रस्तुत करता है, जहाँ कृषक, मजदूर और निम्नवर्गीय पात्र अपने सामाजिक-आर्थिक संघर्षों से जूझते हैं। वे ग्रामीण भारत के यथार्थ को करुणा और संवेदनशीलता से चित्रित करते हैं।

दोनों लेखकों की शैली सहज, जनभाषा-प्रधान और अनुभवशील है। जहाँ राजन गवस की भाषा में तीव्र प्रतिरोध और विद्रोह का स्वर स्पष्ट होता है, वहीं मिथिलेश्वर की भाषा अधिक संतुलित, करुण और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से परिपूर्ण होती है। सामाजिक परिवर्तन दोनों की रचनाओं का मूल उद्देश्य है, किंतु दृष्टिकोण में भिन्नता है — गवस अधिक क्रांतिकारी और उग्र स्वर में लिखते हैं, जबकि मिथिलेश्वर सुधारवादी और मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हैं।

मुख्य संबोध: सामाजिक विषमता, ग्रामीण जीवन, जातिगत संरचना, दलित चेतना , सामाजिक असमानता, आत्मसम्मान, आर्थिक संघर्ष, करुणा, संवेदनशीलता, जनभाषा आदि।

विषय प्रवेश

मिथिलेश्वर और राजन गवस भारतीय समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों की पीड़ा को स्वर देते हैं। एक दलित दृष्टिकोण से, दूसरा ग्राम्य यथार्थ से -दोनों का साहित्य सामाजिक चेतना को समृद्ध करता है। इस तुलनात्मक अध्ययन का उद्देश्य है - यह स्पष्ट करना कि दोनों लेखकों का दृष्टिकोण, विषय-वस्तु, शैली, और वैचारिक आग्रह कैसे एक-दूसरे से जुड़ते हैं और किस प्रकार भिन्न होते हैं।

सामाजिक यथार्थ का चित्रण

राजन गवस और मिथिलेश्वर, दोनों ही लेखक सामाजिक यथार्थ के चित्रण में दक्ष हैं, परंतु उनकी दृष्टि भिन्न है। राजन गवस अपने उपन्यास 'देवकी' और 'उपरा' के माध्यम से दलित समाज की पीड़ा, शोषण और संघर्ष को प्रस्तुत करते हैं। उनका यथार्थ जातिगत उत्पीड़न, सामाजिक बहिष्करण और अस्मिता की खोज से जुड़ा है। वे सत्ता-संरचना के विरुद्ध दलित चेतना की आवाज को मुखर करते हैं। मिथिलेश्वर का सामाजिक यथार्थ मानव जीवन की करुणा, गरीबी, और पारिवारिक विघटन से जुड़ा है। उनके उपन्यास 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै' तथा कहानियाँ 'बबूल' और 'सन्नाटा' ग्रामीण भारत की समस्याओं – बेरोजगारी, विस्थापन, रिश्तों की टूटन – को अत्यंत संवेदनशीलता से उभारती हैं।

मिथिलेश्वर और राजन गवस दोनों ने अपने साहित्य में समाज की विडंबनाओं, विसंगतियों, और परिवर्तनशील प्रवृत्तियों को अत्यंत सजीवता से प्रस्तुत किया है। मिथिलेश्वर का उपन्यास "प्रेम ना बाड़ी ऊपजै" ग्रामीण परिवेश में जातिगत विषमता, सामाजिक रूढ़ियाँ और प्रेम की सामाजिक अस्वीकृति को दर्शाता है।"[१] उनके पात्र समाज की व्यवस्था के भीतर मानवीय संबंधों को तलाशते हैं।

राजन गवस का मराठी कथासंग्रह *'हळवी वाऱ्याची साक्ष'* सामाजिक यथार्थ का सशक्त चित्र प्रस्तुत करता है। इस संग्रह की कहानियाँ विशेष रूप से दलित समुदाय के जीवन संघर्ष, जातिगत शोषण, सामाजिक बहिष्कार और अस्मिता की खोज पर केंद्रित हैं। "राजन गवस उन सच्चाइयों को उजागर करते हैं जो मुख्यधारा के साहित्य में अक्सर उपेक्षित रहती हैं — जैसे शौचालय, पानी, जमीन, शिक्षा और मंदिर प्रवेश जैसे बुनियादी अधिकारों से वंचित जीवन।"[2]

राजन गवस का उपन्यास "पिंपळपान" दलित जीवन की त्रासदी और अस्मिता की तलाश का दस्तावेज है। "उसमें जातीय दमन, सामाजिक अलगाव और सांस्कृतिक विघटन के प्रश्न उठाए गए हैं।"[३] गवस ने मराठी समाज में प्रचलित ब्राह्मणवादी मानसिकता को चुनौती देते हुए साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का औज़ार बनाया है।

दोनों लेखकों का यथार्थ चित्रण उनके वर्गीय, जातीय और सामाजिक अनुभवों पर आधारित है, जो हिन्दी कथा-साहित्य को विविधता और गहराई प्रदान करता है।

दलित चेतना बनाम मानवीय संवेदना

राजन गवस और मिथिलेश्वर हिन्दी साहित्य के ऐसे लेखक हैं जिनकी रचनाएँ सामाजिक यथार्थ को अलग-अलग दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करती हैं। राजन गवस का लेखन विशेष रूप से दलित चेतना से जुड़ा हुआ है। उनकी कृति 'देवकी' एक दलित स्त्री की व्यथा और आत्मसंघर्ष को उजागर करती है, जहाँ जातिगत उत्पीड़न, लैंगिक शोषण और सामाजिक असमानता के विरुद्ध प्रतिरोध की तीव्रता दिखाई देती है। इसी प्रकार उनकी अन्य कृति 'उपरा' में दलित जीवन की अस्मिता और संघर्ष को प्रमुखता से स्थान मिला है। वहीं मिथिलेश्वर का साहित्य मानवीय संवेदना पर आधारित है। "उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै' में पारंपरिक सामाजिक मूल्यों, रिश्तों की गरिमा और ग्रामीण

जीवन की करुणा झलकती है।"[4] 'बबूल', 'हरियर दुनिया' जैसी कहानियाँ मनुष्य की आंतरिक पीड़ा, रिश्तों की जटिलता और जीवन के द्वंद्व को बड़ी संवेदनशीलता से चित्रित करती हैं।

राजन गवस जहाँ जाति-आधारित शोषण के विरुद्ध दलित चेतना को स्वर देते हैं, वहीं मिथिलेश्वर सामान्य मानव की पीड़ा, संघर्ष और भावनात्मक गहराई को उकेरते हैं। दोनों ही दृष्टिकोण सामाजिक यथार्थ को अपने ढंग से उद्घाटित करते हैं, एक प्रतिरोध के स्वर में, दूसरा करुणा के माध्यम से। राजन गवस पूर्णतः दलित चेतना से अनुप्राणित लेखक हैं। उनका लेखन आंबेडकरी विचारधारा पर आधारित है, जिसमें सामाजिक अन्याय, शोषण और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध स्वर मुखर है।[5] उनके कथा-पात्र अपनी अस्मिता की खोज करते हुए ब्राह्मणवादी सत्ता-संरचना को चुनौती देते हैं। इसके विपरीत, मिथिलेश्वर की दृष्टि मानवीय संवेदना से जुड़ी है। वे जातिगत भेदभाव को सामाजिक-मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं। उनके पात्र दलित या पिछड़े वर्ग से होते हुए भी, वे क्रांतिकारी नहीं, बल्कि सामंजस्यवादी होते हैं।

ग्राम्य जीवन का चित्रण

राजन गवस और मिथिलेश्वर, दोनों ही लेखक ग्राम्य जीवन को अपनी रचनाओं में गहराई से चित्रित करते हैं, परंतु उनका दृष्टिकोण भिन्न है। राजन गवस की कहानियाँ जैसे 'देवकी' और 'उपरा' गाँव के दलित समुदाय के जीवन, शोषण, सामाजिक भेदभाव और प्रतिरोध को उजागर करती हैं। उनके गाँव संघर्ष और असमानता के प्रतीक हैं, जहाँ सत्ता और जाति का अन्याय व्याप्त है। वहीं, मिथिलेश्वर का गाँव मानवीय संबंधों, जीवन-संघर्ष और संवेदनाओं से जुड़ा है। 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै', 'बबूल' और 'हरियर दुनिया' जैसी रचनाओं में उन्होंने ग्रामीण जीवन की जटिलताओं, कृषि संकट, बेरोजगारी, और भावनात्मक संबंधों को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

मिथिलेश्वर ने हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन के विविध आयामों का यथार्थपरक चित्रण किया है — खेत-खलिहान, सामाजिक नियंत्रण, पंचायत व्यवस्था, मेलों, रीति-रिवाजों, जातीय श्रेणियाँ, स्त्री-पुरुष संबंध इत्यादि। राजन गवस का ग्रामीण चित्रण दलित दृष्टि से है। वे गाँव को सौंदर्यपूर्ण नहीं, बल्कि असमानता, भेदभाव, और वर्चस्व का प्रतीक मानते हैं। उनका ग्रामीण अनुभव प्रतिरोध और विद्रोह से जुड़ा हुआ है। जहाँ राजन गवस ग्राम्य जीवन को विद्रोह और दलित चेतना के केन्द्र से देखते हैं, वहीं मिथिलेश्वर उसे मानवीय करुणा और संबंधों की दृष्टि से चित्रित करते हैं।

स्त्री विमर्श

राजन गवस और मिथिलेश्वर दोनों ही लेखकों की रचनाओं में स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उपस्थित होता है, किंतु उनके दृष्टिकोण और प्रस्तुति में अंतर है। "मिथिलेश्वर की महिला पात्र जैसे रामकली या बबलू की माँ पारंपरिक सीमाओं में रहते हुए भी आत्मनिर्णय की आकांक्षा करती हैं।"[6] स्त्री पात्रों के माध्यम से वे सामाजिक रूढ़ियों और स्त्री-स्वतंत्रता की सीमा पर सवाल उठाते हैं।

राजन गवस की स्त्रियाँ दोहरी गुलामी की शिकार हैं — जातीय और पितृसत्तात्मक। वे प्रताड़ना झेलती हैं, परंतु उनके भीतर प्रतिरोध की ज्वाला भी है।

राजन गवस का लेखन दलित स्त्री की दोहरी पीड़ा—जाति और लिंग—दोनों स्तरों पर शोषण को सामने लाता है। उनकी चर्चित कृति 'देवकी' में एक दलित स्त्री के जीवन संघर्ष, शोषण, सामाजिक बहिष्कार और आत्मसम्मान की खोज को केंद्र में रखा गया है। देवकी केवल जातीय अन्याय की शिकार नहीं, बल्कि पुरुषवादी सोच से भी जूझती है। गवस स्त्री को एक जागरूक, विद्रोही और अस्मिता की तलाश में संलग्न पात्र के रूप में चित्रित करते हैं। वहीं मिथिलेश्वर का स्त्री चित्रण मानवीय करुणा और संबंधों की बुनावट में रचा-बसा होता है। उपन्यास 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै' और कहानियाँ जैसे 'बबूल' या 'सन्नाटा' में स्त्रियाँ पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक दबावों के बीच पीड़ित, त्यागमयी किंतु संवेदनशील रूप में सामने आती हैं। वे स्त्रियों की मानसिक स्थितियों, भावनात्मक द्वंद्व और समाज द्वारा लादी गई सीमाओं को बड़ी संवेदनशीलता से व्यक्त करते हैं।

राजन गवस की स्त्री चेतना विरोध और अस्मिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, जबकि मिथिलेश्वर की स्त्री सहज मानवीय संवेदना और संघर्षशील जीवन की प्रतीक बनती है। दोनों ही लेखकों ने स्त्री विमर्श को अपने-अपने सामाजिक अनुभवों के अनुरूप सजीव रूप में प्रस्तुत किया है।

वैचारिक प्रतिबद्धता

राजन गवस और मिथिलेश्वर दोनों ही लेखक अपने साहित्य में गहन वैचारिक प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते हैं, किंतु उनकी दृष्टि और सरोकार अलग हैं।

राजन गवस की वैचारिक प्रतिबद्धता दलित विमर्श, सामाजिक न्याय *और* वंचित वर्ग की अस्मिता के प्रति है। वे अपने उपन्यास 'देवकी', 'उपरा' तथा अन्य कहानियों के माध्यम से जाति-आधारित शोषण, ब्राह्मणवादी वर्चस्व और सामाजिक विषमता को तीव्रता से चुनौती देते हैं। उनका साहित्य सामाजिक परिवर्तन और विद्रोह की चेतना को मुखर करता है। गवस का लेखन एक क्रांतिकारी उपकरण के रूप में कार्य करता है, जो व्यवस्था के खिलाफ प्रतिरोध खड़ा करता है। वहीं मिथिलेश्वर की वैचारिक प्रतिबद्धता मानवतावादी दृष्टिकोण, ग्रामीण जीवन की पीड़ा, और सामाजिक तटस्थता की ओर झुकी हुई है। उनके उपन्यास 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै', कहानियाँ 'बबूल', 'सन्नाटा' आदि में साधारण मनुष्य का संघर्ष, रिश्तों की टूटन, और जीवन की कठोर वास्तविकताएँ संवेदना और करुणा के साथ उभरती हैं। वे किसी विचारधारा विशेष के पक्षधर नहीं होते, बल्कि मानवीय मूल्यों के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं।

इस प्रकार, राजन गवस की प्रतिबद्धता संघर्षात्मक सामाजिक परिवर्तन की ओर है, जबकि मिथिलेश्वर की प्रतिबद्धता संवेदनात्मक सामाजिक यथार्थ के चित्रण में निहित है। दोनों की वैचारिक निष्ठा उनके साहित्य को अर्थवत्ता प्रदान करती है।

भाषा और शैली

राजन गवस और मिथिलेश्वर, दोनों ही लेखक अपनी भाषिक विशेषताओं और लेखन शैली के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं, किंतु उनके भाषा-प्रयोग और शैलीगत रुझान भिन्न हैं।

राजन गवस की भाषा तेज, प्रतिरोधात्मक और प्रहारात्मक होती है। वे आमतौर पर लोकभाषा, बोलचाल की भाषा और दलित समाज के शब्द-संस्कारों का उपयोग करते हैं। उनकी शैली संघर्षात्मक, प्रतीकात्मक और आक्रोश से भरपूर होती है। उदाहरण के लिए, उपन्यास 'देवकी' में गवस ने दलित स्त्री की पीड़ा को मार्मिक शब्दों में इस तरह उकेरा है कि पाठक की अंतरात्मा झकझोर उठती है। उनका भाषा-प्रयोग सामाजिक अन्याय के खिलाफ प्रतिरोध का हथियार बनता है। मिथिलेश्वर की भाषा सरल, सहज और भावनात्मक रूप से प्रभावशाली होती है। वे प्रांजल ग्रामीण हिंदी का प्रयोग करते हैं, जिसमें लोकजीवन की गंध और बोलियों की मिठास होती है। उनकी शैली वर्णनात्मक, यथार्थपरक और करुणामूलक होती है। उपन्यास 'प्रेम ना बाड़ी ऊपजै' और कहानियाँ 'बबूल', 'हरियर दुनिया' में भाषा जीवन की सूक्ष्म स्थितियों और भावनाओं को अत्यंत प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करती है।

संक्षेप में, गवस की भाषा विद्रोह की आग है, तो मिथिलेश्वर की भाषा संवेदना की बूँद। दोनों लेखकों की शैली उनके वैचारिक पक्ष और विषयवस्तु के अनुरूप ढली हुई है, जो उनके साहित्य को प्रभावशाली और प्रामाणिक बनाती है।

निष्कर्ष

1. राजन गवस (मराठी साहित्य) और मिथिलेश्वर (हिंदी साहित्य) समकालीन भारतीय साहित्य में समाज के वंचित, हाशिए पर खड़े, और दलित तबके की पीड़ा, स्वप्न और संघर्ष को स्वर देने वाले प्रमुख रचनाकार हैं।
2. राजन गवस और मिथिलेश्वर दोनों ही समकालीन भारतीय साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं जिन्होंने अपने-अपने समाज की वास्तविकताओं को सजीव किया है।
3. राजन गवस का साहित्य दलित आंदोलन की चेतना से भरा हुआ है, वहीं मिथिलेश्वर का साहित्य एक मानवीय संवाद की तलाश करता है।
4. दोनों लेखक जातिगत असमानता, स्त्री की स्थिति और सामाजिक रूढ़ियों पर प्रश्न खड़े करते हैं, यद्यपि उनकी शैली और वैचारिक दृष्टिकोण भिन्न हैं।
5. यद्यपि दोनों विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आते हैं, किंतु उनका साहित्य समानांतर सामाजिक यथार्थ की व्याख्या करता है।
6. राजन गवस डॉ. आंबेडकर की विचारधारा से प्रभावित हैं। उनका साहित्य दलित विमर्श का सशक्त माध्यम है। वे जाति-उन्मूलन, सामाजिक न्याय, और आत्मसम्मान के पक्षधर हैं।

7. मिथिलेश्वर का वैचारिक आधार समाजवादी और मानवीय मूल्यों पर टिका है। वे किसी विशेष विचारधारा से बंधे हुए नहीं दिखते, परंतु समाज में व्याप्त असमानता के प्रति सजग हैं।
8. मिथिलेश्वर की भाषा में ग्रामीण जनजीवन की सजीवता है — लोक मुहावरे, सहज संवाद और भावात्मक प्रवाह उनकी रचनाओं की विशेषता हैं। उनका लेखन सहज, प्रांजल और संवेदनात्मक है।
9. राजन गवस की भाषा तीव्र, प्रतीकात्मक, कभी-कभी व्यंग्यात्मक और विद्रोही स्वर में होती है। वे मराठी के दलित मुहावरों और सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग करते हैं, जिससे लेखन को आंदोलनधर्मी रूप मिलता है।
10. संक्षेप में, दोनों लेखक भारतीय समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों की पीड़ा को स्वर देते हैं। एक दलित दृष्टिकोण से, दूसरा ग्राम्य यथार्थ से — दोनों का साहित्य सामाजिक चेतना को समृद्ध करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. मिथिलेश्वर, *प्रेम ना बाड़ी ऊपजै*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2005, पृ. क्र. 22
2. गवस राजन, *हळवी वाऱ्याची साक्ष*, डायमंड प्रकाशन, पुणे, 2002, पृ. क्र. 13
3. मिथिलेश्वर, *बबलू की शादी और अन्य कहानियाँ*, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1998, पृ. क्र. 16
4. गवस राजन, *पिंपळपान*, मौज प्रकाशन, पुणे, 1991, पृ. क्र. 44
5. मिथिलेश्वर, *प्रेम ना बाड़ी ऊपजै*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2005, पृ. क्र. 33
6. मिथिलेश्वर, *बबलू की शादी और अन्य कहानियाँ*, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1998, पृ. क्र. 45